International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 27-28

ओमप्रकाश वाल्मिकी के साहित्य में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक चित्रण

[1] माया माहेश्वरी, [2] निर्मला राव

[1] शोध छात्रा, हिन्दी विभाग कॅरियर पॉइन्ट विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत।
[2] सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग पेसेफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश
''साहित्य समाज का दर्पण है''। साहित्य भाव व विचार की अभिव्यक्ति का साधन मात्र ही नहीं है बल्कि वह रचयिता की समग्र जीवन दृष्टि का प्रतिफलन है। दलित साहित्य में दलितों के बारे में काफी कुछ लिखा गया है, परन्तु ओमप्रकाश वाल्मिकी की आत्मकथा जूठन में दलित जीवन की पीड़ा, तिरस्कार, शोषण इत्यादि का वास्तविक रुप से वर्णन किया गया है। ओमप्रकाश वाल्मिकी ने जूठन के द्वारा दलितों के सामाजिक, आर्थिक धार्मिक और सांस्कृतिक रुप का जो चित्रण किया है, वो किसी और दलित साहित्य में नही मिलता। ओमप्रकाश वाल्मिकी को दलित जीवन जीने का अनुभव होने के कारण 'जूठन' के माध्यम से इन्होंने दलितों के यर्थाथ अनुभवों की पीड़ा को व्यक्त किया है।

मूल शब्द : साहित्य, जूठन, गूढ, मौलिकता, व्यापकता, यथार्थ, संस्कृति।

प्रस्तावना
''साहित्य समाज का दर्पण है''। 'साहित्य'–शब्द, अर्थ और भावनाओं की वह त्रिवेणी है जो जनहित की धारा के साथ उच्चादर्शों की दिशा में प्रवाहित है। साहित्य भाव व विचार की अभिव्यक्ति का साधन मात्र ही नहीं है, बल्कि वह रचयिता की समग्र जीवन दृष्टि का प्रतिफलन है। समाज और साहित्य का धनिष्ठ संबंध है, ये एक दूसरे पर आश्रित है। भारतीय साहित्य पिछले कुछ दशकों में बहुत बदल गया है, क्योंकि साहित्य जिस समाज पर लिखा जाता है, उस समाज में भी बहुत बदलाव हुआ है। इस बदलाव को दलित साहित्य आन्दोलन में देखा जा सकता है। सदियों से ही भारतीय समाज वर्ण व्यवस्था के बन्धनों में जकड़ा हुआ है। हिन्दू समाज चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में विभाजित था। शूद्रों की स्थिति अत्यन्त ही दयनीय रही है। ''निम्न स्तर का होने के कारण सवर्ण समाज द्वारा इनको अछूत, अस्पृश्य, वर्णशंकर कहकर समााज के लिए आवश्यक नाना कर्मो में नियुक्त करके नाना प्रकार के प्रपंचों का जाल रचकर उनका मनमाना शोषण, दोहन, दलन और उत्पीड़न किया गया।''[1] इनको सभी अधिकारों से वंचित रखा गया। भारतीय समाज में दलित हमेशा से ही शोषित, पीड़ित और उपेक्षित बनकर हाशिये पर खड़े रहे। रामचन्द्र वर्मा ने अपने शब्दकोश में ''दलित का अर्थ लिखा है मसला हुआ, मर्दित, दबाया, रौंदा या कुचला हुआ।''[2] इन सब का प्रतिशोध जब वाणी और लेखनी के जरिये प्रस्फुटित हुआ तो उसी का नाम दलित साहित्य पड़ा।

दलित साहित्य
दलित साहित्य के प्रवर्तक डॉ. वानखेड़े को माना जाता है। दलित साहित्य वह साहित्य है, जो सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक क्षैत्रों में पिछड़े हुए उत्पीड़ित, अपमानित और शोषित जनों की पीड़ा को व्यक्त करता है। दलित साहित्य दलितों की पीड़ा, वेदना, उत्पीडन और संस्कृति का विरोध करता है। यह साहित्य दलितों के दुख और दर्द का करुण दस्तावेज होता है। दलित साहित्य का दायरा बहुत विस्तृत है, उसे किसी सीमा में बांधा नहीं जाता। दलित साहित्य का प्रारम्भ मुख्य रुप से मराठी साहित्य में हुआ। महाराष्ट्र के ज्योतिबा फूले आदि से इसका विकास हुआ। किन्तु धीरे–धीरे इसने भारत की तमाम भाषाओं में अपना स्थान बनाते हुए भारतीय दलित साहित्य रुपी विशाल आकार ग्रहण कर लिया। मराठी दलित साहित्य ने आत्मकथा को एक नया आयाम प्रदान किया। 'अक्करमाशी' शरण कुमार लिंबाले की आत्मकथा ही नहीं, बल्कि यह भारतीय समाज और संस्कृति की सबसे बड़ी विडम्बना है। संपूर्ण सच्चाईयों का पर्दाफाश करने वाली यह आत्मकथा सवालों की झड़ी लगा देती है और समाज के लोग अनुत्तरित रह जाते हैं। लेखक अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये नीग्रो के सम्मुख प्रश्न करता है ''मैं कौन हूँ ?''[3] और इसके उत्तर में जो शब्द निर्मित होते हैं वह भी सवाल बनकर रह जाते है। भारत रत्न संविधान निर्माता एवं प्रसिद्ध दलित चिन्तक डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रेरणा से दलित चिन्तन का अखिल भारतीय स्तर पर प्रचार प्रसार हुआ। हिन्दी उपन्यास साहित्य में दलितों के जीवन विषयक कई उपन्यासों की रचना हुई है जैसे ''एक चिथड़ा इतिहास'', ''बंझर धरती'', ''ग्राम सेवक'', ''ग्राम देवता'', ''गोदान'', बहुत नाच्यों गोपाल आदि। मुन्शी प्रेमचन्द के उपन्यास ''गोदान'' में अछूत समस्या को विस्तृत रुप से चित्रित किया गया है।[4] वर्तमान दलित साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकारों में ओमप्रकाश वाल्मिकी भी एक है। हिन्दी में दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश वाल्मिकी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ओमप्रकाश वाल्मिकी के अनुसार दलितों द्वारा लिखा जाने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है, क्योंकि दलित ही दलित की पीड़ा को अच्छे ढंग से समझ सकता है। दलित साहित्य की व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए ओमप्रकाश वाल्मिकी ने लिखा है '' दलित साहित्य सिर्फ एक दलित, अछूत या शूद्र का साहित्य नहीं है, दलित साहित्य का अपने आप में बहुत व्यापक अर्थ है। 'दलित' शब्द के भीतर छिपा गूढ अर्थ जिस भाव की व्याख्या करता है वह एक पहचान है, उन लागों की जो सदियों से दबे, कुचले, प्रताड़ित व उपक्षित लोग है, जिन्होनें जीवन के हर क्षैत्र में अपनी रचनात्मकता, ढृढ़ता और मौलिकता सिद्ध की है। इस दिशा के निर्माण में अपना जीवन स्वाहा किया है, किन्तु सत्ता और उसके इर्द–गिर्द बिखरे स्वार्थी तत्वों ने उन्हें कभी स्वीकार नही किया। देखा जाता है कि हमारे समाज के सवर्ण मानसिकता के लोग दलित आौर नारी को अपने पैरों की जूती समझते है। किन्तु आज के संदर्भ में यह मानना एक भ्रम है। ओमप्रकाश वाल्मिकी द्वारा रचित अपनी आत्मकथा 'जूठन' में वंचित वर्ग की समस्याओं पर ध्यान आकृष्ट किया है। ओमप्रकाश वाल्मिकी ने अपनी आत्मकथा 'जूठन' में दलित जीवन की पीड़ा, तिरस्कार, शोषण,

उत्पीड़न आदि का वर्णन किया है। समकालीन दलित साहित्यकारों में ओमप्रकाश वाल्मिकी का अलग स्थान है, वाल्मिकी जी समकालीन दलित साहित्यकारों की परम्परा को सशक्त रुप देने में सफल हुए है।

जूठन का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक चित्रण

ओमप्रकाश वाल्मिकी की आत्मकथा है जूठन। दलित साहित्य की यह कृति दुख और तकलीफों को झेलते रहने के बाद उनसे लड़ने की ललक के साथ लिखी गई महत्वपूर्ण गद्य रचना है। जिन्दगी का महिमा मण्डल नही अपितु, सामाजिक जीवन की विद्रूपता ही जूठन की कथावस्तु है। जूठन की विशेषता लोकतान्त्रिक या जनजाति सोचविचार के काफी करीब होना और मार्क्सवाद के प्रति झुकाव है। यह ऐसी दलितवादी या अम्बेडकरवादी आत्मकथा है, जिसमें लेखक को अम्बेडकर और मार्क्स दोनों ताकत और प्रेरणा देते हैं। दलित आन्दोलन के लोकतान्त्रिक चरित्र व ताकत तथा साथ ही उसकी सीमाओं को कला के स्तर पर समझने के लिए 'जूठन' अत्यन्त ही जरुरी गद्य साहित्य है। ओमप्रकाश वाल्मिकी की आत्मकथा जूठन में कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाओं और प्रताड़नाओं की अविराम श्रृंखला है, जो लेखक के साथ बचपन में हुई क्रूर घटनाओं से लेकर हाल तक की अमानवीय घटनाओं का तार्किक चित्रण करती है। ओमप्रकाश वाल्मिकी की आत्मकथा जूठन में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में दलित जीवन के यथार्थ संघटन का चित्रण किया गया है। ओमप्रकाश वाल्मिकी ने व्यंग्य का भी सहारा लेकर समाज में स्थित बुराईयों, त्रुटियों, आडम्बर और विसंगतियों का पर्दाफाश किया। जूठन में दलित जीवन, उनके पेशे, वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, अंधविश्वास, रीति–रिवाज, परिवार और ऊँच नीच की अमानवीय संस्कृति, दलित संस्कृति, आक्रोश और विद्रोह आदि का विश्लेषण हैं। जूठन दलित जीवन और उनकी पीड़ा का ऐतिहासिक दस्तावेज है। जूठन जातिगत मान अपमान के प्रश्नों पर विचार करती हुई व्यक्ति की योग्यता के अवमूल्यन को अंकित करती है। भारतीय समाज जहाँ अनेकता में एकता का दावा करता है, वहाँ एकता के भीतर ऐसी घुटन भरी अनेकता विद्यमान है जिसमें सदियों से एक वर्ग को श्वास लेने में भी तकलीफ का अनुभव होता था। जूठन में लेखक ने व्यक्तिगत अनुभवों के अनेक उदाहरणों के माध्यम से सामूहिक पीड़ा का अंकन किया है। यह आत्मकथा सभ्य कहे जाने वाले समाज पर प्रश्न चिह्न लगाती है तथा सभ्य होने के समस्त दावों को खोखला साबित करती है। जूठन आत्मकथा वातावरण और परिवेश की समानता की माँग करती है, अमानवीयता के प्रति विरोध को दर्शाती है। यद्यपि इस रचना में आक्रोश के स्वर हर जगह मिलते है, पर यह भी सत्य है कि बार बार किया गया अमानवीय व्यवहार आक्रोश को जन्म देता है। जूठन के आर्थिक चित्रण के अन्तर्गत दलितों को मनुष्य न बनने देने की उस सवर्ण व्यूह रचना का प्रभावी चित्रण हुआ है, जीवन में जिन साधनों की अपेक्षा रहती है वे 'अर्थ' अर्थात धन के बिना सुलभ नही है। अतः मानव का जीवन ही आर्थिक स्थिति पर निर्भर है, इसलिए कहा जाता है कि 'धनम, मूलम, इहम, जगत।' अर्थात धन ही सबका मूल है। लेकिन यह उक्ति दलितों के सन्दर्भ में सही प्रतीत नही होती, क्योंकि इस व्यवस्था में धन सबके मूल में नही है, बल्कि जाति अहम होती है। हिन्दू जाति व्यवस्था में धार्मिक दृष्टि से ब्राह्मणों को विशेषाधिकार प्राप्त है, लेकिन दलितों की स्थिति अत्यन्त दयनीय। मंदिरो में उनके प्रवेश पर प्रतिबन्ध, खानपान तथा मिलने जुलने में छूआछूत, शादी–विवाह में भेद–भाव, ब्राह्मणों के समान रीति–रिवाज, तीज–त्योहार आदि के मनाने पर रोक आदि के कारण दलितों की स्थिति जानवरों से भी बदत्तर रही है। दलितों का कोई उपनयन संस्कार नहीं होता था। जबकि सवर्णों के लिए उपनयन संस्कार होता था। जन्म से ही वह श्रेष्ठ माना जाता था। इस सन्दर्भ में 'हिन्दूत्व का दर्शन ' में डॉ. अम्बेडकर कहते है–''भारतीय इतिहास के ताने को धर्म न केवल हर स्थान पर बाना बनकर आड़े आता है, बल्कि हिन्दू मन के लिए वह ताना भी है और बाना भी।''[5] संसार में मनुष्य ही 'संस्कृति का निर्माण करता है। असल में जीवन जीने का तरीका ही संस्कृति है। इस देश में कइ संस्कृतियों ने जन्म लिया लेकिन हिन्दू संस्कृति में तो केवल हिन्दू लोगों के लिए ही स्थान था दलितों के लिए नही। कहने को दलित भी हिन्दू ही थे लेकिन वह अलग पूजा करते थे, दलितों के देवता हिन्दूओं से अलग हाते थे। ऐसे प्रसंग को 'जूठन' में लेखक बताते है –'' कहने को तो बस्ती के सभी लोग हिन्दू थे। लेकिन किसी हिन्दू देवी देवताओं की पूजा नही करते थे। जन्माष्ठमी पर कृष्ण की नहीं जहारपीर की पूजा होती थी या 'पौन' पूजे जाते थें। वे भी अष्टमी के नही 'नवमी' के ब्रह्म मुहूर्त में। इसी प्रकार दीपावली पर लक्ष्मी का नही 'माई मरदान के नाम पर सुअर का बच्चा चढाया जाता था या फिर कढाई की जाती थी, यानि हलवा पूरी का भोग लगाया जाता था।''[6] अतः कहा जा सकता है कि जूठन सिर्फ ओमप्रकाश वाल्मिकी की आत्मकथा ही नहीं अपितु दलित समाज का भोगा सच है जहाँ जाति व्यवस्था की बहुत गहरी खायी है और वहां से आने वाली दर्दनाक चीखे है।

निष्कर्ष

हमारी समाज व्यवस्था के तहत शिक्षा संस्थानों में दलितों के साथ बहुत ही अन्याय होता है। जीवन के पहले अध्याय यानी शिक्षा की जगह से ही उन्हें यातनाओं का सामना करना पड़ता है। आर्थिक क्षैत्र में दलित अनेकानेक आर्थिक अभावों से त्रस्त थे, राजनीतिक अधिकारों से पूर्णत वंचित थे। शैक्षिक क्षैत्र में उनके अधिकार स्पष्टतः निषिद्ध थे तथा सार्वजनिक जीवन में वे एक दास के रुप में जीवन व्यतीत करने को बाध्य थे। भारतीय समाज संरचना में वर्ण अथवा जाति एक महत्वपूर्ण घटक है। हिन्दू संस्कृति का यह आधार और प्राण है। जाति के बिना व्यक्ति की पहचान या परिचय अधूरा रहता है। जूठन में दलित सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक आदि का चित्रण हमें देखने को मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. दलित वैचारिकी की दिशाएं– बद्रीनारायण, प्रथम संस्करण, राधाकृश्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 2008, पृ.सं.–75।
2. संक्षिप्त शब्द सागर–रामचन्द्र वर्मा (सम्पादक) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, नवम संस्करण, 1987, पृ.सं.–468।
3. अक्करमाशी–शरण कुमार लिंबाले, प्रथम संस्करण, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 2009, पृ.सं.–24।
4. गोदान –प्रेमचन्द, डायमण्ड बुक्स, दिल्ली, 1969 पृ.सं.–328।
5. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङमय–,कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली पृ.सं.–40।
6. जूठन–ओमप्रकाश वाल्मिकी, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2009 पृ.सं. –पूरा।